

विचार बिन्दु

धन से हम जीवन की सारी सुख सुविधा तो हासिल कर सकते हैं, पर जीवन में सुकून केवल अच्छे कर्मों से ही आता है।

- अरविन्द कटोच

प्रकृति पर्यावरण और प्रदूषण

प्रकृति पर्यावरण और प्रदूषण एक दूसरे के पूरक हैं। प्रकृति में कोई विकृति आणी तो पर्यावरण बिगड़ेगा जिसका खामियाजा हमें प्रदूषण के रूप में उठाना होगा। इन तीनों में सामंजस्य हुआ तो मनुष्य को बेहतर जीवन जीने का अवसर मिलेगा। प्रकृति के बिना मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। मानव के मनुष्य के जन्म के साथ ही उसका प्रकृति से निकट का सम्बन्ध जुड़ जाता है। प्रकृति अपनी चीजों का उपभोग स्वयं नहीं करती। हमारी आधारभूत जरूरतें जैसे हवा, पानी, भोजन आदि सभी प्रकृति से ही प्राप्त होते है साथ ही प्रकृति ने हमें कई प्रकार के फूल, पक्षियां, पशु, पेड़ पौधे, नीला आकाश, जमीन, नदिया, समुद्र, पहाड़, प्रदान किया है। जिससे मनुष्य एक बेहतर और अच्छा जीवन व्यतीत कर पाता है। यह कहा जा सकता है प्रकृति ही मानव का पोषण करती आई है। मनुष्य प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना है। यदि मनुष्य प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करता रहा तो प्रकृति भी एक दिन इंसान के वजुद के साथ छेड़छाड़ शुरू कर देगी । मनुष्य का यह शरीर भी प्रकृति के पाँच तत्वों से मिल कर बना है, वायु, अग्नि, जल, आकाश, मिट्टी और फिर यह प्रकृति ही इस शरीर को वापस अपने में मिला लेती है। हम पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व को जारी रखना चाहते हैं तो प्रकृति का संतुलन हर हालत में बनाये रखना होगा। यदि प्रकृति के अनुरूप हमने अपने आप को ढाल लिया तो ठीक नहीं तो अस्तित्व समाप्त होने का खतरा उत्पन्न हो जायेगा।

प्रकृति व पर्यावरण एक-दूसरे के पूरक हैं। प्राकृतिक संपदाओं के महत्व को समझना, उनका किफायती उपयोग करना, उनके संरक्षण को प्राथमिकता देना हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है। जल, जंगल और जमीन प्रकृति के तीन प्रमुख तत्व हैं जिनके बगैर हमारी प्रकृति अधूरी है। प्रकृति के इन तीनों तत्वों का इस कदर दोहन किया जा रहा है कि इसका सन्तुलन डगमगाने लगा है। प्रकृति के साथ हम बड़े पैमाने पर छेड़छाड़ कर रहे हैं, यह उसी का नतीजा है कि पिछले कुछ समय से भयानक तूफानों, बाढ़, सूखा, भूकम्प जैसी आपदाओं का सिलसिला तेजी से बढ़ा है। हम प्रकृति की चिंता नहीं करते और यही वजह है कि प्रकृति ने भी अब हमारी चिंता छोड़ दी है। हमने बिना सोचे समझे संसाधनों का दोहन किया है। यही वजह है कि अब पर्यावरण का संतुलन बिगड़ गया है और बाढ़, सूखा, सुनामी जैसी आपदाएं आ रही हैं। बरसों से पर्यावरण को हम इसांनों ने बहुत नुकसान पहुंचाया है। प्रकृति से साथ इंसान का लगातार खिलवाड़ एक भयानक विनाश को आमंत्रण दे रहा है, जहां किसी को बचने की जगह नहीं मिलेगी। जल को व्यर्थ में बहा रहे हैं जंगलों को काट रहे हैं और जमीन पर जहरीले कीटनाशक का उपयोग करके उसकी उर्वरक क्षमता और उपजाऊ शक्ति को कमजोर कर रहे हैं। प्रकृति पर मंडराता खतरा जस का तस बना हुआ है। सबसे बड़ा खतरा तो इसे ग्लोबल वार्मिंग से है। धरती के तापमान में लगातार बढ़ते स्तर को ग्लोबल वार्मिंग कहते है। वर्तमान में ये पूरे विश्व के समक्ष बड़ी समस्या के रुप में उभर रहा है। ऐसा माना जा रहा है कि धरती के वातावरण के गर्म होने का मुख्य कारण का ग्रीनहाउस गैसों के स्तर में वृद्धि है। इसे लगातार नजरअंदाज किया जा रहा है जिससे प्रकृति पर खतरा बढ़ता जा रहा है। ये आपदाएं पृथ्वी

प्रकृति व पर्यावरण एक-दूसरे के पूरक

हैं। प्राकृतिक संपदाओं के महत्व को समझना, उनका किफायती उपयोग करना, उनके संरक्षण को प्राथमिकता देना हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है। जल, जंगल और जमीन प्रकृति के तीन प्रमुख तत्व हैं जिनके बगैर हमारी प्रकृति अधूरी है। प्रकृति के इन तीनों तत्वों का इस कदर दोहन किया जा रहा है कि इसका सन्तुलन डगमगाने लगा है। प्रकृति के साथ हम बड़े पैमाने पर छेड़छाड़ कर रहे हैं, यह उसी का नतीजा है कि पिछले कुछ समय से भयानक तूफानों, बाढ़, सूखा, भूकम्प जैसी आपदाओं का सिलसिला तेजी से बढ़ा है।

पर ऐसे ही होती रहीं तो वह दिन दूर नहीं जब पृथ्वी से जीव-जन्तु व वनस्पति का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा।

प्रकृति के संरक्षण का अर्थ है कि वनों, भूमि,जल निकायों का संरक्षण और खनिजों, ईंधन, प्राकृतिक गैसों आदि जैसे संसाधनों का संरक्षण, यह सुनिश्चित करने के लिए किये सभी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहें। ऐसे कई तरीके हैं जिनसे आम आदमी प्रकृति के संरक्षण में मदद कर सकता है। इनमें से कुछ ऐसे हैं जो आसानी से किए जा सकते हैं और एक बहुत बड़ा बदलाव ला सकते हैं। प्रकृति हमें पानी, भूमि, सूर्य का प्रकाश और पेड़-पौधे प्रदान करके हमारी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करती है।

इन संसाधनों का उपयोग विभिन्न चीजों के निर्माण के लिए किया जा सकता है जो निश्चित ही मनुष्य के जीवन को अधिक सुविधाजनक और आरामदायक बनात हैं। प्रकृति के संरक्षण से अभिप्राय जंगलों, भूमि, जल निकायों की सुरक्षा से है तथा प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण खनिजों, ईंधन, प्राकृतिक गैसों जैसे संसाधनों की सुरक्षा से है जिससे यह सुनिश्चित हो सके किये सब प्रचुर मात्रा में मनुष्य के उपयोग के लिए उपलब्ध रहें। ऐसे कई तरीके हैं जिससे आम आदमी प्रकृति के संरक्षण में मदद कर सकता है। यहां कुछ ऐसे ही तरीकों का विस्तृतवर्णन किया गया है जिससे मानव जीवन को बड़ा लाभ हो सकता है।

पृथ्वी के पास हर ईंधन की जरूरत पूरी करने के लिए काफी कुछ है, लेकिन उसके लालच को पूरा करने के लिए नहीं है। पृथ्वी पर पानी, हवा, मिट्टी, खनिज, पेड़, जानवर, पौधे आदि हर किस्म की जरूरत के लिए उपसंधान है। लेकिन औद्योगिक विकास की होड़ में हम पृथ्वी को सफाई और उसके ही स्वास्थ्य को नजर अंदाज करने लगे है।

हम कुछ भी करने से पहले यह बिलकुल नहीं सोचते कि हमारी उस गति विधि से प्रकृति को कितना नुकसान होगा। प्रकृति का संरक्षण प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से संबंधित है। इनमें मुख्यतः पानी, धूप, वातावरण, खनिज, भूमि, वनस्पति और जानवर शामिल हैं। प्रकृति हमें पानी, भूमि, सूर्य का प्रकाश और पेड़-पौधे प्रदान करके हमारी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करती है। इन संसाधनों का उपयोग विभिन्न चीजों के निर्माण के लिए किया जा सकता है जो निश्चित ही मनुष्य के जीवन को अधिक सुविधाजनक और आरामदायक बनाते हैं।

मनुष्य का प्रकृति से अटूट सम्बंध है। प्रकृति की रक्षा, उसके संरक्षण और विलुप्ति की कगार पर पहुंच रहे जीव-जंतु तथा वनस्पति की रक्षा का संकल्प प्रत्येक मानव का है। प्रकृति का संरक्षण प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से संबंधित है। इनमें मुख्यतः पानी, धूप, वातावरण, खनिज, भूमि, वनस्पति और जानवर शामिल हैं। प्रकृति हमें पानी, भूमि, सूर्य का प्रकाश और पेड़-पौधे प्रदान करके हमारी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करती है। इन संसाधनों का उपयोग विभिन्न चीजों के निर्माण के लिए किया जा सकता है जो निश्चित ही मनुष्य के जीवन को अधिक सुविधाजनक और आरामदायक बनाते हैं।

मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समय समय पर प्रकृति का दोहन करता चला आ रहा है। अगर प्रकृति के साथ खिलवाड़ होता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हमें शुद्ध पानी, हवा, उपजाऊ भूमि, शुद्ध पर्यावरण, वातवरण एवं शुद्ध वनस्पतियों नहीं मिल सकेंगी। इन सबके बिना हमारा जीवन जीना मुश्किल हो जायेगा।

हमारा शरीर प्रकृति के पांच तत्वों से मिल कर बना है। यदि हम प्रकृति की रक्षा करेंगे तथा उससे अपनाने रखते हैं तो प्रकृति भी हमारे शरीर की रक्षा करेगी। हम अनेक प्रकार की बीमारियों से बचे रहेंगे। प्रकृति का संरक्षण मानव जाति का संरक्षण है क्योंकि ये प्राकृतिक तत्व ही हैं जो हमें जीवन देते हैं। ऐसे में यह समाज के हर व्यक्ति का दायित्व है कि वह अपने आसपास के प्रकृतिक संसाधनों की रक्षा करे।

बालमुकुन्द ओझा,
अतिथि संपादक,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार।

राशिफल शनिवार 24 जनवरी 2026

माघ मास शुक्ल पक्ष, षष्ठी तिथि, शनिवार, विक्रम सम्वत 2082, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र दिन 2.16 तक, शिव योग दिन 2.02 तक, कोलक करण दिन 1.13 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-मिथुन, शुक्र-मकर, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतू-सिंह राशि में संचार करेगा।

आज रविवोग दिन 10.50 तक है। रविवोग दिन 2.16 से पुनः आरम्भ होगा। आज पंचक शौलताअष्टमी है।

श्रेष्ठ चौघण्टा - शुभ 8.40 से 9.59 तक, चट 12.39 से 1.59 तक, लाभ-अमृत 1.59 से 4.38 तक राहुकाल 9.00 से 10.30 तक सूर्योदय 7.20 सूर्यास्त 5.58



मेघ
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

मन में असंतोष बना रहेगा। परिवारिक कार्यों के कारण भाग-दौड़ रहेगी।



तुला
व्यावसायिक विवादों का निपटारा हो सकता है।

अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



वृष
आर्थिक-व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। आय में वृद्धि होगी।

संभावित स्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। धार्मिक स्थान की यात्रा सम्भव है।



वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



मिथुन
- व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटक हुए कार्य शीघ्रता सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

परिवार में महत्वपूर्ण कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।



धनु
घर-परिवार में अर्थितियों का आगमन बना रहेगा।

परिवार में महत्वपूर्ण कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।



कर्क
परिवार में शुभ-मौलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य से संबंधित यात्रा संपन्न होेगी। नवीन कार्य के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक सम्पर्क बनेंगे।

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा नहीं है।

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा नहीं है।



कुंभ
आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक यात्रा सम्भव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक यात्रा सम्भव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



कन्या
परिवार में आपसी सहयोग सम्भव बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मौलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

परिवार में आपसी सहयोग सम्भव बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मौलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



मीन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल आत्मविश्वास बढ़ेगा। आलेख्य और महत्वपूर्ण कार्य योजनासुरा बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता सुगमता से बनने लगेंगे।

परिवार में आपसी सहयोग सम्भव बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मौलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

राजस्थान का युवा केंद्रित विकास मॉडल - अवसर, विश्वास और सशक्त भविष्य



सुरभि मिश्रा

वसंत पंचमी एवं नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती के पानवन अवसर पर राज्य सरकार द्वारा युवाओं के लिए की गई घोषणाएं राजस्थान के दीर्घकालिक और समावेशी विकास योजनाओं के माध्यम से सीधे हस्तांतरित की है। इसके अंतर्गत 3 लाख विद्यार्थियों को 126.81 करोड़ रुपये का प्रत्यक्ष लाभ अंतरण, 3.34 लाख विद्यार्थियों को 130 करोड़ रुपये की लागत से निःशुल्क साइकिल वितरण तथा 4.40 लाख विद्यार्थियों को 53 करोड़ रुपये की राशि का डायरेक्ट ट्रांसफर सुनिश्चित किया गया है।इन पहलों से न केवल शिक्षा से जुड़ा आर्थिक बोझ कम हुआ है, बल्कि विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति निरंतरता और आत्मविश्वास भी सुदृढ़ हुआ है।

राज्य सरकार शिक्षा को केवल अकादमिक उपलब्धि तक सीमित नहीं मानती, बल्कि उसे संस्कार, अनुशासन और सामाजिक चेतना से जोड़ने पर

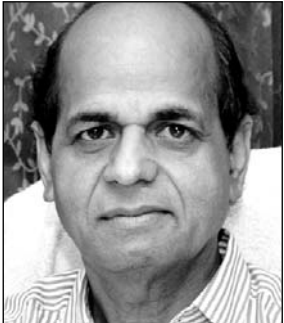
भी बल देती है। इसी क्रम में 75 लाख विद्यार्थियों द्वारा सामूहिक सरस्वती वंदन जैसे आयोजनों के माध्यम से शिक्षा के सांस्कृतिक और नैतिक पक्ष को सशक्त किया गया है। साथ ही, युवा संवाद तथा अभिभावक-शिक्षक संवाद जैसे कार्यक्रम यह सुनिश्चित करते हैं कि नीतियों का निर्माण जमीनी अनुभवों और सुझावों के आधार पर हो। युवाओं की प्रगति के लिए परिवारिक सामाजिक सुरक्षा को एक महत्वपूर्ण आधार मानते हुए राज्य सरकार ने 700 करोड़ रुपये की सामाजिक सुरक्षा पेंशन राशि का हस्तांतरण किया है। इससे कमजोर वर्गों की आर्थिक संबल मिला है और युवाओं पर परिवारिक दायित्वों का दबाव कम हुआ है, जिससे वे अपने शैक्षणिक, व्यावसायिक और कौशल विकास के लक्ष्यों पर अधिक एकाग्रता के साथ आगे बढ़ पा रहे हैं।

रोजगार के क्षेत्र में राज्य सरकार ने पारदर्शिता और समयबद्धता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। एक लाख से अधिक सरकारी पदों पर नियुक्तियों की जा चुकी है तथा आगामी एक लाख पदों के लिए भर्ती परीक्षाओं का कैलेंडर जारी किया गया है। इससे युवाओं में यह विश्वास सुदृढ़ हुआ है कि चयन प्रक्रिया निष्पक्ष, स्पष्ट और समयबद्ध

होगी। इसके साथ ही सरकार यह भी स्वीकार करती है कि बदलते सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में केवल सरकारी नौकरी ही रोजगार का एकमात्र माध्यम नहीं हो सकती। इसी सोच के साथ युवा नीति-2026 और रोजगार नीति-2026 को लागू किया गया है। इनके अंतर्गत निजी क्षेत्र, स्टार्टअप, सेवा उद्योग, तकनीक आधारित रोजगार और डिजिटल प्लेटफॉर्म को समान महत्व दिया गया है। इन नीतियों का लक्ष्य मार्च 2029 तक 15 लाख रोजगार अवसरों का सृजन करना है। स्वरोजगार और उद्यमिता को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना-2026 को प्रभावी रूप से क्रियान्वित किया जा रहा है। इसके तहत 1 लाख युवाओं को 10 लाख रुपये तक का ब्याज मुक्त ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है। शैक्षणिक योग्यता के अनुसार सेवा और विनिर्माण क्षेत्रों में अलग-अलग ऋण सीमाएं निर्धारित की गई हैं। इससे प्रामोणी और निरंतरता, पारदर्शिता और प्रतिबद्धता के साथ यह दृष्टिकोण आने वाले वर्षों में राज्य के उज्ज्वल भविष्य की मजबूत आधारशिला सिद्ध होगा।

सुरभि मिश्रा
अंतरराष्ट्रीय स्वदेश
खिलाड़ी

विधानमंडलों में एआई : सुविधा के साथ सावधानी भी



डॉ. कैलाश चन्द्र सैनी

डिजिटल परिवर्तन के इस दौर में कृत्रिम मेधा (एआई) लोकातांत्रिक संस्थाओं के कामकाज को अधिक तेज, सुव्यवस्थित और पारदर्शी बनाने का सशक्त माध्यम बनकर उभरी है। किंतु सुविधा की इस चमक के पीछे सावधानी का सवाल भी उठना ही महत्वपूर्ण है। विधानमंडलों के संदर्भ में एआई का उपयोग केवल तकनीकी दक्षता तक सीमित न रहकर संवैधानिक विवेक, मानवीय संवेदना और उत्तरदायित्व की कसौटी पर भी परखा जाना आवश्यक है। यही इसी संतुलन की पड़ताल का प्रयास किया गया है जिससे तकनीक लोकतंत्र की सहायक बने, उसका विकल्प नहीं।

डिजिटल युग में लोकतंत्र के भविष्य को लेकर हाल ही में नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रमंडल देशों के स्पीकर और पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन (सीएसपीओसी) का यह संदेश स्पष्ट और दृढ़गामी रहा कि 'तकनीक लोकतंत्र को सक्षम बना सकती है, किंतु वह मानवीय विवेक का स्थान नहीं ले सकती। 16 जनवरी 2026 को सम्मेलन के समापन सत्र में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला एवं राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश द्वारा व्यक्त इस साझा अभिमत ने यह रेखांकित किया कि कृत्रिम मेधा (एआई) अब केवल प्रशासनिक सुविधा नहीं रही, बल्कि नीति निर्माण और विधायी प्रक्रियाओं की प्रभावित करने वाली एक निर्णायक शक्ति बन चुकी है। ऐसे समय में जब विश्व के

127 से अधिक देशों में एआई के नियमन पर गंभीर बहस चल रही है, भारत और उसके राज्य विधानमंडलों के लिए यह प्रश्न और भी प्रासंगिक हो जाता है कि तकनीक को कितनी छूट दी जाए और विवेक की सीमाएँ कहाँ खींची जाएँ। लोकतंत्र का मूल स्वभाव मानवीय है। संसद और विधानसभाएँ केवल कानून बनाने वाले संस्थान नहीं, बल्कि समाज की चेतना, संवेदना और विविधताओं की अभिव्यक्ति का मंच हैं। एआ इस व्यवस्था में गति, दक्षता और पारदर्शिता ला सकते हैं, परंतु यदि पारदर्शिता का संतुलन टूटे तो यही सुविधा लोकातांत्रिक मूल्यों के लिए चुनौती भी बन सकती है।

विधायी कार्यों में एआई : विधायी प्रक्रियाओं में शोध, दस्तावेजीकरण और सूचना-संसाधन की भूमिका निरंतर बढ़ रही है। एआई हजारों पृष्ठों के विधेयकों, नियमावलियों, न्यायिक निर्णयों और अंतरराष्ट्रीय उदाहरणों का त्वरित विश्लेषण कर सकता है। भारतीय संसद में इस दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, जहाँ लगभग 48,000 तकनीकी शब्दों वाले 'संसदीय शब्दावली' के शब्दकोश को न केवल तेज बल्कि त्रुटिरहित बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

कानून के प्रारूपण में भी एआई सहायक सिद्ध हो सकता है। विशेषकर भाषा की स्पष्टता, संदर्भों की संगति और मौजूदा कानूनों से टकराव की पहचान जैसे कार्यों में बहुभाषी भारत में 22 भारतीय भाषाओं में संसदीय दस्तावेजों के अनुवाद और बहसों के विश्लेषण के लिए इसका उपयोग शुरू हो चुका है। कोई भी नागरिक अपनी मातृभाषा में सदन की कार्यवाही का सटीक और तात्कालिक अनुवाद सहजता से देख सकता है। इसे लोकतंत्र का वास्तविक सशक्तीकरण ही कहा जायेगा।

राजस्थान विधानसभा:

डिजिटल प्रयोग और यथार्थ राजस्थान विधानसभा के लिए यह विमर्श विशेष महत्व रखता है। हाल के वर्षों में विधानसभा ने 'नेशनल -विधान एप्लिकेशन' (नेवा) के माध्यम से कागज रहित कार्यवाही, प्रश्नोत्तर, विधेयकों और समितियों के दस्तावेजों को डिजिटल मंच पर लाने की दिशा में ठोस कदम उठाए हैं। प्रश्नों की ऑनलाइन प्रक्रिया, सदन की कार्यवाही का डिजिटल अभिलेखन और विधायकों को टैब आधारित सूचनाएँ उपलब्ध कराना ये समस्त कदम दक्षता बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण एवं सारहनीय हैं।

हाल के वर्षों में राजस्थान विधानसभा यह चिंता जता चुकी है कि तुच्छ या दोहराव वाले प्रश्न संसदीय समय और ऊर्जा को नष्ट करते हैं। एआ यहाँ एक सहायक बन सकता है लेकिन यह तब करना कि को प्रश्न तुच्छ है या जनहित से जुड़ा, यह निर्णय अंततः जनप्रतिनिधि की ही होना चाहिए, मशीन का नहीं।

राजस्थान का सामाजिक और भौगोलिक परिदृश्य यह भी दर्शाता है कि नीति-निर्माण केवल आँकड़ों से संभव नहीं। मध्यमवर्गीय क्षेत्रों की जल-समस्या, सीमावर्ती जिलों की सुरक्षा-संवेदनशीलता, किसानों की पौड़ा किसी मशीनी गणना (एग्लोरिदम) के पपूर्तः समझ में नहीं आ सकती। एआ आँकड़े दे सकता है, रश्चान बता सकता है, पर जमीनी सच्चा को आत्मसात करने का विवेक केवल निर्वाचित जनप्रतिनिधियों के पास होता है। इसलिए राजस्थान विधानसभा में एआ की भूमिका सहायक तक सीमित रहना ही लोकातांत्रिक दृष्टि से उचित है।

वैश्विक स्तर पर विधायी क्षेत्र में एआ का हस्तक्षेप तेजी से बढ़ा है। स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2016 से 2023 के बीच दुनिया भर की संसदों में एआ से संबंधित 123 विधेयक पारित किए

गए। वर्तमान में संसदें स्वयं को कागज आधारित सभडनों से बदलकर डेटा संचालित संस्थाओं में रूपांतरित कर रही हैं। एस्तोनीया में स्वचालित स्टेनोग्राफी, इटली में दस्तावेजों का मशीनी अनुवाद और ब्राजील में नागरिकों की टिप्पणियों का वर्गीकरण इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। ये उपकरण न केवल समय बचाने में सक्षम हैं, बल्कि विधायी कर्मचारियों को अधिक जटिल और विश्लेषणात्मक कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने की सुविधा भी देते हैं।

नवाचार, संयम और संस्थागत ज्ञान : विधायिका में एआई को अपनाने का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत नवाचार और संयम का संतुलन है। अनियंत्रित नवाचार जहाँ गलत सूचना या मशीनी पक्षपात का जोखिम बढ़ाता है, वहीं अत्यधिक संयम संस्थागत जड़ता का कारण बन सकता है। यदि तकनीक के डर से उसे पूरी तरह नकार दिया जाए, तो लोकातांत्रिक संस्थाएँ आधुनिक चुनौतियों का सामना करने में पिछड़ जाएँगी। अतः एआई का उपयोग हमेशा संदर्भपरक और नैतिक होना चाहिए। वेस्टमिंस्टर फाउंडेशन फॉर डेमोक्रेसी के दिशानिर्देश भी इसी चरणबद्ध दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं, जहाँ किसी भी तकनीक को पहले अनियंत्रित वातावरण में परखना आवश्यक है।

एआई के पास सूचनाओं का ढेर हो सकता है, लेकिन संस्थागत ज्ञान और संवेदना केवल मनुष्यों के पास होती है। भारतीय संसदीय प्रयासों में तकनीकी सहायता के बावजूद, अंतिम नियंत्रण हमेशा मानवीय विश्लेषण के हाथ में रखा गया है। लोकतंत्र केवल आँकड़ों से नहीं, बल्कि वर्षों के अनुभव और जवाबदेही से संचालित होता है। एक मशीनी गणना यह तो बता सकती है कि स्वास्थ्य बजट में कितनी वृद्धि हुई, लेकिन वह किसी सुदूर गाँव के अस्पताल की जमीनी पीड़ा और वहाँ की मानवीय संवेदना को नहीं समझ सकता।

यह विवेक केवल निर्वाचित जनप्रतिनिधि के पास ही सुरक्षित रहता है। भारत की एआई पहल का मुख्य उद्देश्य नागरिकों की समस्याओं को गहराई से समझना और कार्यप्रणाली को 'तेज' के साथ-साथ 'विश्वसनीय' बनाना भी है।

तकनीक साधन है, समाधान नहीं। एआई लोकतंत्र का विकल्प नहीं, बल्कि एक साधन है। यह विधायकों और विधानसभा कर्मियों का बोझ कम कर सकता है, शोध को सुदृढ़ कर सकता है और पारदर्शिता बढ़ा सकता है। किंतु वह विवेक, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व को प्रतिस्थापित नहीं कर सकता। लोकतंत्र को मशीनी तंत्र नहीं, बल्कि एक जीवंत मानवीय व्यवस्था है। संसद और विधानसभाओं को केवल सुविधाजनक नहीं, बल्कि उत्तरदायी होना चाहिए। यदि तकनीक का उपयोग पारदर्शिता और शोध के लिए किया जाता है, तो यह लोकातांत्रिक प्रक्रियाओं को मजबूत करेगा। लेकिन यदि विवेक को तकनीक के हवाले कर दिया गया तो यह व्यवस्था को भीतर से खोखला कर सकती है।

राजस्थान सहित देश की सभी विधानसभाओं के लिए यह सही समय है कि वे एआई को अपनाएँ, पर आँख मूँदकर नहीं स्पष्ट नियमों, नैतिक मर्यादाओं और मानवीय नियंत्रण के साथ। सुविधा से आगे बढ़ते हुए सावधानी को अनिवार्य बनाना ही लोकतंत्र की रक्षा का सफाई मार्ग है। अंततः यह सत्य सदैव प्रासंगिक रहेगा कि संकट चाहे किताब भी आधुनिक हो, मानवीय धैर्य और मानसिक कौशल ही सबसे अचूक प्रहार सिद्ध होते हैं। विधानमंडलों के कार्यक्रमण में एआई को सहायक बनाया जाए निर्णायक नहीं, विश्लेषक बनाया जाए न्यायकर्ता नहीं। तकनीक लोकतंत्र की सेवक बनी रहे, स्वामी नहीं, यही आधुनिक भारत के संसदीय लोकतंत्र की गरिमा का मूल आधार होगा।

- डॉ. कैलाश चन्द्र सैनी, वरिष्ठ लेखक।

रात में बरसे बादल, सुबह तक गरजे

बीकानेर, (निसं)। यहा मौसम एक बार फिर बरल गया है। अब पश्चिमी विक्षोभ के चलते देर रात जहां हल्की बरसात हुई, वहीं सुबह तक बादलों का जमावड़ा बना हुआ है। रात में बादल इतने तेज गरजे की लोगों की नींद ही खुल गई। मौसम विभाग की मानें तो आने वाले दस दिन तक बीकानेर में इसी तरह का मौसम रहेगा। इधर,

शायदियों का सीजन शुरू हो गया है, ऐसे में लोगों को व्यवस्था की चिंता हो रही है। बीकानेर में देर रात हल्की बूंदाबादी हुई। लोग सुबह उठे तो सड़कें भीगी हुई नजर आईं।

रातभर बादलों के गरजने की आवाज ने परेशान किया। बारिश से मौसम सुहाना हो गया है, वहीं मावट की इस बारिश से किसान के चेहरे

खिले हुए हैं। ये बारिश फसल के लिए फायदेमंद रहेगी। गुरुवार को बारिश भी मौसम विभाग से हुई है। अब 26 जनवरी को फिर नया विक्षोभ आ सकता है। इससे भी बारिश होगी। माना जा रहा है कि अब फरवरा के शुक्रवाती दिनों तक ऐसा ही माहौल रहेगा। फरवरी के पहले सप्ताह में शायदियों के आयोजन

शुरू हो चुके हैं, जिसमें बारिश के कारण खलल पड़ना शुरू हो गया है। मौसम विभाग के निदेशक राधेश्याम शर्मा का कहना है कि दो विक्षोभ के कारण एक सप्ताह तक मौसम में उतार-चढ़ाव और बदलाव देखने को मिलेगा। फरवरी के पहले सप्ताह से मौसम सामान्य हो जाएगा।